

# माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन



मणिमाला  
(शिक्षाशास्त्र)

शिक्षक-शिक्षा संकाय  
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय,  
प्रयागराज

शोध आलेख सार— अध्ययन का शीर्षक “माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन” है जिसके अन्तर्गत दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, विविधता एवं मौलिकता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन के विशय की समस्या की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत “सर्वेक्षण विधि” का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र-छात्राओं को जनसंख्या माना है। अध्ययन के उद्देश्यों के लिए प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50–50 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया। उपकरण के रूप में प्रोफेसर बाकर मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में औँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी-अनुपात का प्रयोग किया गया है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर पाया गया कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता में अन्तर है अर्थात् सामान्य विद्यार्थियों में प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता दिव्यांग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा विविधता एक-दूसरे के समान है।

की-वर्ड— माध्यमिक स्तर, दिव्यांग, सामान्य, विद्यार्थी, सृजनात्मकता

## प्रस्तावना—

मनुष्य एक बुद्धिजीवी एवं सामाजिक प्राणी है। बुद्धि की सहायता से मानव अपनी परिस्थितियों से समायोजन बनाये रखता है। मनुष्य समाज में रहकर अन्तर्सम्बन्धों के माध्यम से नित नई वस्तुओं को देखकर सदैव वह अपने व्यवहार में परिवर्तन करके वह अपनी सृजनात्मक शक्तियों का विकास करता है। शिक्षा के द्वारा ही सृजनात्मक शक्तियों का विकास होता है। किसी देश का बहुमुखी विकास सृजनशील शक्तियों पर निर्भर करता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र विज्ञान, कला, साहित्य, संगीत एवं राजनीति में सृजनात्मकता की आवश्यकता होती है। सृजनात्मकता पर नवीन आविष्कार करने व जीवन की जटिल समस्याओं को सुझालाने में सहायक होती है।

प्राचीनकाल में माना जाता था कि बौद्धिक क्षमता वाला व्यक्ति ही सृजनात्मक हो सकता है। किन्तु आज मनोवैज्ञानिक अनुसंधानों से स्पष्ट है कि सृजनात्मकता बुद्धि से स्वतंत्र है। वर्तमान समय में सृजनशील व्यक्ति शिक्षा के माध्यम से सृजनात्मक शक्तियों का विकास कर सकता है। आज विज्ञान, तकनीकी व औद्योगिक क्षेत्र में नूतन आविष्कार हो रहे हैं। अनुसंधान के परिणाम विकास को गति प्रदान करते हैं। आज सृजनात्मकता शिक्षा मनोविज्ञान का एक अभिन्न अंग बन गई। विभिन्न प्रकार के सृजनात्मक परीक्षणों का विकास प्रत्येक आयु स्तर और क्षेत्र की सृजनात्मकता मापने के लिये किया जा रहा है। सृजनात्मकता विद्यार्थियों के लिए विशेष प्रकार के पाठ्यक्रमों एवं

सृजनात्मक शिक्षकों की भी व्यवस्था की चर्चा चल रही है। आज की समस्यायुक्त समाज में सृजनशील व्यक्ति का संरक्षण आवश्यक है। युवा हमारी धरोहर हैं उनकी प्रतिभा और क्षमता का उपयोग राष्ट्र निर्माण में होना चाहिए। सृजनशील विद्यार्थियों को उनकी योग्यता के अनुरूप शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। अगर सृजनशील विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता का सम्मान एवं संवर्धन नहीं किया जाता है तो वे इस क्षमता को विध्वंसात्मक कार्यों में इस्तेमाल कर सकते हैं। इसलिए सृजनशील व्यक्तियों की पहचान करना व उनके विकास के अवसर उपलब्ध कराना राष्ट्र का कर्तव्य है।

सृजनात्मकता, व्यक्तित्व और बुद्धि की अपेक्षा कम अन्वेषित है। भारत में विदेशों की अपेक्षा इस क्षेत्र में बहुत कम शोध कार्य हुए हैं। शिक्षा मुख्य रूप से शिक्षक, शिक्षार्थी, पाठ्यक्रम और उसकी अध्ययन विधि आदि तत्वों पर आधारित होती है। इनके समुचित संतुलन के अभाव में सृजनात्मकता का विकास सम्भव नहीं है। शिक्षकों में प्रायः सृजनात्मकता का अभाव है। शिशु स्तर से माध्यमिक विद्यालयों तथा विश्वविद्यालयों में संचालित पाठ्यक्रम व शिक्षण विधि व्यावहारिक न होकर सैद्धान्तिक बनकर रह गये हैं। हमारे देश में समय—समय पर सरकार द्वारा गठित समितियों, आयोगों आदि विशेष रूप से राष्ट्रीय शिक्षा—नीति 1986 ने भी प्रत्येक स्तर के बालकों में सृजनात्मकता के विकास हेतु शिक्षा की गुणवत्ता पर बल दिया है। परन्तु उनके द्वारा दिये गये सुझावों का क्रियान्वयन न करने पर छात्रों के व्यवहार में वांछित परिवर्तन नहीं हो पा रहा है।

आज का युवक सामान्यतः दिशाविहीन और लक्ष्यहीन है। इसलिए वे सृजन की ओर अग्रसर न होकर विध्वंस की ओर उद्यत हैं। इसका मुख्य कारण, उपयुक्त दिशा में शिक्षा का शुद्ध स्वरूप न होना है। इस प्रकार सार्थक शिक्षा के अभाव में वे असहाय और कुठित होने के लिए विवश हैं। इसका उद्भव उनकी शिक्षा के प्रारम्भिक वर्षों में ही होने लगता है, जिससे उनमें समायोजन की क्षमता देखने को मिलती है।

सामाजिक-आर्थिक उच्च होने पर बच्चों को उच्च स्तरीय विद्यालयों में शिक्षा ग्रहण के लिए भेजने पर वहाँ का वातावरण बच्चों के सृजनात्मकता पर सकारात्मक प्रभाव के साथ—साथ उन्हें सृजनशील जैसे खेलों एवं प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग के लिए तैयार किया जाता है जिससे उनके सृजनात्मकता क्षमता में वृद्धि होती है। पूर्व शोध अध्ययनों से ज्ञात होता है कि विद्यालय वातावरण का विद्यार्थियों के सृजनात्मक क्षमता पर सकारात्मक प्रभाव डालता है। **रिडंरमान व अन्य (2004)** ने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि प्रक्रिया—गति का विद्यालय निष्पत्ति पर बुद्धि व सृजनात्मकता के माध्यम से प्रभाव तो अवश्य है परन्तु यह अप्रत्यक्ष रूप से ही प्रभावित करता है। **लिंडस्टॉर्म (2006)** ने सृजनात्मकता क्या है? क्या आप इसका मूल्यांकन कर सकते हैं? क्या इसे शिक्षित किया जा सकता है? का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्ष में पाया गया कि उचित शिक्षण माध्यमों का चुनाव करके विद्यार्थियों में सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है। **किलमोविन, गिडरे एवं अन्य (2010)** ने शोधकर्ताओं ने पाया निष्कर्ष में पाया कि प्रायः छात्र एवं अध्यापक धैर्यपूर्वक कार्य नहीं करते, परन्तु यदि छात्रों को पर्याप्त समय दिया जाय तो छात्रों में अधिक सृजनात्मक व्यवहार उत्पन्न किया जा सकता है। यदि कक्षा—कक्ष में छात्रों के समक्ष खतरा मोल लेने की प्रवृत्ति के साथ कार्य करने को प्रोत्साहित किया जाता तो यह उनके सृजनात्मक क्षमताओं में विकास में सहायक होता है। छात्रों के सीखने में सृजनात्मक क्षमता के वृद्धि के लिए यह बहुत आवश्यक है कि कक्षा—कक्ष का वातावरण खुला हुआ, मजाकियाँ एवं पूर्णतया स्वतंत्र होना चाहिए। **अलफुहैगी (2015)** ने विद्यालय वातावरण एवं सृजनात्मकता विकास सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण में पाया कि— छात्रों के सृजनात्मक विकास के लिए स्कूल एक मात्र संस्था होती है। वर्तमान वैश्वीकरण, आर्थिक प्रगति एवं संचार तकनीकी के युग में जहाँ एक तरफ नयी—नयी खोजे हो रही है वही पर स्कूलों में छात्रों की सृजनात्मकता उन्नयन हेतु किये गये प्रयासों का महत्व बढ़ जाता है। शोध से निष्कर्ष में पाया कि मस्तिष्क के विकास के साथ—साथ सृजनात्मकता का भी विकास होता है। **एलिसावेट एवं अन्य (2013)** ने अध्ययन में निष्कर्ष के रूप में पाया कि— छात्रों के सृजनात्मक विकास कमी पायी गयी जिन संस्थाओं में सृजनात्मकता विकास हेतु आवश्यक संसाधनों का व्यवस्थित उपयोग एवं प्रयोग नहीं किया गया है तथा कक्षा—कक्ष वातावरण की संमृद्धिशाली होना अथवा संसाधन विहीन होना छात्रों के सृजनात्मक विकास से सीधा सम्बन्ध रखता है।

## समस्या कथन—

“माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन।”

## अध्ययन का उद्देश्य—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है—

- 1- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- 2- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- 3- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा विविधता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
- 4- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा मौलिकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

## परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में उद्देश्यों की पूर्ति हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है—

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा विविधता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा मौलिकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

## भौध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन के विशय की समस्या की प्रकृति के अनुसार वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत “सर्वेक्षण विधि” का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् छात्र—छात्राओं को जनसंख्या माना है। अध्ययन के उद्देश्यों के लिए प्रयागराज जनपद में स्थित दिव्यांग एवं सामान्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् 50–50 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया। उपकरण के रूप में प्रोफेसर बाकर मेंहदी का शाब्दिक सृजनात्मक चिन्तन परीक्षण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आँकड़ों के विश्लेषण के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं टी—अनुपात का प्रयोग किया गया है।

## प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

**उद्देश्य—1** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

**H<sub>1</sub>** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में सार्थक अन्तर है।

**H<sub>01</sub>** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

### तालिका – 1

#### (प्रवाहशीलता)

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M <sub>1</sub> -M <sub>2</sub> )	मानक त्रुटि (SED)	टी– अनुपात (t- value)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	दिव्यांग विद्यार्थी	50	29.50	10.44	7.18	2.29	3.14	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक
2	सामान्य विद्यार्थी	50	36.68	12.38					

तालिका 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता का मध्यमान क्रमशः 29.50 एवं 36.68 है और मानक विचलन क्रमशः 10.24 तथा 12.38 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 3.14 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। दोनों मध्यमानों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों में प्रवाहशीलता दिव्यांग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

### तालिका – 2

#### (विविधता)

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा विविधता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र0 सं0	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (SD)	मध्यमानों का अन्तर (M <sub>1</sub> -M <sub>2</sub> )	मानक त्रुटि (SED)	टी– अनुपात (t- value)	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	दिव्यांग विद्यार्थी	50	24.86	7.59	1.86	1.61	1.16	0.05 (1.98)	0.05 सार्थकता स्तर पर असार्थक
2	सामान्य विद्यार्थी	50	23.00	8.45					

तालिका 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा विविधता का मध्यमान क्रमशः 24.86 एवं 23.00 है और मानक विचलन क्रमशः 7.59 तथा 8.45 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी–अनुपात का मान 1.16 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से कम है अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत की जाती है। दोनों मध्यमानों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा विविधता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों में सृजनात्मकता की विमा विविधता में समानता है।

### तालिका – 3

#### (मौलिकता)

**माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा मौलिकता का मध्यमान, मानक विचलन एवं टी- अनुपात**

क्र0 सं0	समूह	संख्या <b>(N)</b>	मध्यमान <b>(M)</b>	मानक विचलन <b>(SD)</b>	मध्यमानों का अन्तर <b>(M<sub>1</sub>-M<sub>2</sub>)</b>	मानक त्रुटि <b>(SED)</b>	टी— अनुपात <b>(t- value)</b>	सार्थकता स्तर एवं सारिणी मान	परिणाम
1	दिव्यांग विद्यार्थी	50	5.06	2.45				0.05 सार्थकता स्तर पर	
2	सामान्य विद्यार्थी	50	6.40	2.79	1.34	0.53	2.55	0.05 (1.98) सार्थक	

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा मौलिकता का मध्यमान क्रमशः 5.06 एवं 6.40 है और मानक विचलन क्रमशः 2.45 तथा 2.79 है। तालिका के विश्लेषण से स्पष्ट है कि उक्त मध्यमानों में अन्तर के टी—अनुपात का मान 2.55 है जो .05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 1.98 से अधिक है अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। दोनों मध्यमानों पर दृष्टिपात करने से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की विमा मौलिकता में सार्थक अन्तर है। निष्कर्षतः माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों में मौलिकता दिव्यांग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।

#### निष्कर्ष—

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये—

- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा प्रवाहशीलता, मौलिकता एवं सृजनात्मकता दिव्यांग के विद्यार्थियों की अपेक्षा उच्च है।
- माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् दिव्यांग एवं सामान्य विद्यार्थियों के सृजनात्मकता की विमा विविधता एक—दूसरे के समान है।

#### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ओकेर एवं नदेके (2012). इन्फलुएन्स ऑफ जेप्डर एण्ड नॉलेज ऑन सेकेण्डरी स्कूल स्टूडेन्ट्स साइंटिफिक क्रियेटिविटी स्किल इन नकुरु डिस्ट्रिक, केन्या, यूरोपियन जर्नल ऑफ एजूकेशनल रिसर्च, 1(4), 353–366
- अलफुहैगी, सारी सलेम (2015). स्कूल इच्चायरमेट एण्ड क्रियेटिव डेवलेपमेण्ट : ए रिव्यू ऑफ लिटेरचर, जर्नल ऑफ एजूकेशनल एण्ड इस्ट्रूक्शनल स्टडीज इन द वर्ल्ड, 5(2), पृ० 33–37

- किलमोविन, गिडेर एवं अन्य (2010). क्रिएटिव क्लासरूम क्लाइमेट एसेसमेन्ट फॉर द एडवांसमेन्ट ऑफ फॉरेन लग्युवेज एक्चीजिशन. *Kalbu Studi Jos, 2010. 16 NR, Studies about languages, No. 16*
- एलिसावेट एवं अन्य (2013). प्राइमरी फिजिकल एजूकेशन परासपेक्टिव ऑफ क्रियेटिव : द कैरेटरस्ट्रिक्स ऑफ द क्रियेटिव स्टूडेन्ट एण्ड देयर क्रियेटिव आउटकम, इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ ह्युमनिस्टिस एण्ड सोशल साइंस, 3(3), पृ० 234–247
- रिडंरमान, एच०; न्यूबर, ए०सी० (2004) प्रोसेसिंग स्पीड,इंटेलीजेंस, क्रियेटिविटी एंड स्कूल परफरमेंस टेस्टिंग ऑफ कॉजल हाइपोथेसेस यूजिंग स्ट्रक्चरल इक्वेशन मॉडल्स इंटेजीजेंस, अंक 32सं० 6 पृ० 573–589, ई० आर०आई० सी० वेब पोर्टल।
- रेड्डी, के. जनार्दन; विश्वनाथ, के. एवं रेड्डी, एस० विश्वनाथ (2015). इम्पैक्ट ऑफ डिमोग्राफी वैरियेबल ऑफ नॉन वर्बल क्रियेटिव एमंग हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स, द इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ इण्डिया साइकोलॉजी, 2(4), 105–115
- लिडंस्टॉर्म, लार्स (2006) क्रियेटिविटी व्हॉट इज इट? कैन यू एसेस इट? कैन इट बी टॉट? इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट एंड डिजाइन एजूकेशन, अंक 25 सं० 1 पृ० 53–66, ई० आर० आई० सी० वेब पोर्टल
- सिद्दीकी, सैमा (2011). ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ क्रियेटिविटी एमंग ब्यायज एण्ड गल्स ऑफ क्लास—VII, इण्डियन एजूकेशन रिव्यू 49(2), 5–14